INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 7 | AUGUST – 2024

रूस-यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में भारत की गुटनिरपेक्ष नीति: एक विश्लेषण

मनीष कुमार
UGC-JRF, M.A. (रक्षा एवं सामरिक अध्ययन),
शोधार्थी, रक्षा एवं सामरिक अध्ययन, मेरठ कॉलेज, मेरठ (उ. प्र.)

सार

भारत की गुटनिरपेक्ष नीति देश की विदेश और सुरक्षा रणनीति की आधारशिला रही है। यह नीति गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत पर आधारित है जिसका अर्थ यह है कि एक देश किसी भी प्रमुख शक्ति/गुट या किसी विशेष विचारधारा के साथ संबंध बनाने से इनकार करता है। इसके बजाय, यह नीति राष्ट्रों के बीच शांति और सहयोग को बढ़ावा देने की कोशिश करती है। गुटनिरपेक्ष नीति संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ को वैश्विक वर्चस्व के लिए शीत युद्ध केदौरान उभरी थी। भारत ने इस संघर्ष में तटस्थ रहने का विकल्प चुनाथा। गुटनिरपेक्ष नीति भारत के लिए अंतर्राष्ट्रीय मामलों में अपनी तटस्थता बनाए रखने का एक प्रभावी साधन रही है। इसने भारत को दुनिया भर के देशों के साथ मजबूत राजनयिक संबंध विकसित करने में सक्षम बनाया है। भारतकई देशों के साथ मजबूत आर्थिक संबंध बनाने में सक्षम रहा है।गुटनिरपेक्ष नीति की सफलता के बावजूद, वर्तमान वैश्विक मुद्दों से निपटने एवं अंतर्राष्ट्रीय संकटों को हल करने में अधिक सक्रिय भूमिका नहीं निभाने केकारण कुछ लोगों द्वारा इसकी आलोचना की गई है। रूस-यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में भारत की स्थिति को दर्शाते हुए, यह अध्ययन भारत की गुटनिरपेक्ष विदेश नीति पर प्रकाश डालेगा, और यह कैसे एक जटिल अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य को संचालित करने में सफल रहा है।

कुंजी शब्द - गुटनिरपेक्ष नीति, शांति, सहयोग, तटस्थ, रूस-यूक्रेन युद्ध।

गुटनिरपेक्षता क्या है?

सकारात्मक रूप से गुटनिरपेक्षता का अर्थ है विदेश नीति का वह मूल सिद्धान्त जिसके अन्तर्गत कोई भी देश अपने आप कोशीत युद्ध तथा सैन्य सन्धियों से दूर रखते हुए,अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में अपने महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हितों तथा शान्ति तथा सुरक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय उद्देश्य की मांग, दोनों के आधार पर सक्रिय भाग लेता है। यह विदेश नीति का वह सिद्धान्त है जिसका अर्थ है सामान्य रूप से सन्धियों सेतथा विशेषतया सैनिक सन्धियों से दूर रहना। यह शब्द प्रायः उन राष्ट्रों की विदेश नीतियों कावर्णन करने के लिये किया जाता रहा है, जो न दो साम्यवादी गुट और न ही गैर-साम्यवादी गुट के साथ सैनिक अथवा सुरक्षात्मक सन्धि तथा गठजोड़ करते हैं।

गुटनिरपेक्षता की परिभाषा

गुट निरपेक्ष शब्द का पहली बार प्रयोग करने का श्रेय जार्ज तिस्का (George Liska) को जाता है, जिसने इसका प्रयोग उस राज्य की नीतियों का वर्णन करने के लिए किया जिसने युद्धोत्तर काल की विश्व राजनीति में दोनों गुटों में से किसी एक में भीन शामिल होने का निर्णय किया। उसके बाद ही फिर 'गुटनिरपेक्ष शब्द का प्रयोग दोनों महाशक्तियों तथा उनके गुटों के बीच की सैनिक सन्धियों, शीतयुद्ध तथा

शक्ति- राजनीति से दूर रहने की नीति के लिए किया जाने लगा। साधारण शब्दों में गुटनिरपेक्षता का अर्थ शीत युद्ध तथा सैन्यसन्धियों से दूर रहने के बावजूद एक राष्ट्र के राष्ट्रीय हितों तथा विश्व-विचार पर आधारित स्वतन्त्र निर्णय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सक्रिय रूप से भाग लेना उस युग में जब सारा विश्व वास्तव में दो गुटों में बटा हुआ था, जिसके मध्य शीत युद्ध छिड़ा हुआ था, भारत जैसे बहुत देशों के नीति-निर्माताओं ने शीत युद्ध से दूर रहने तथा अपनी सुरक्षा तथा शेष राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने पर अधिक से अधिक ध्यान देना श्रेष्ठ समझा।

- अप्पोदोराय के शब्दों में, गुटनिरपेक्षता की सबसे अच्छी परिभाषा इस तरह की जा सकती है।"किसी भी देश के साथ सैन्य सन्धि और विशेषतया किसी साम्यवादी या पश्चिमी गुट के किसी राष्ट्र के साथ सैनिक सन्धि में शामिल न होना। गुटनिरपेक्षता प्रत्येक सैनिक सन्धि को शीत युद्ध तथा । तनावों का उपकरण मानती है। इसलिए यह इसे विश्व शान्ति तथा सुरक्षा के लिए भयानक मानते। है। येसन्धियों ऐसे साधन है जिनके द्वारा महाशक्तियाँ सदस्य राष्ट्रों की स्वतन्त्रता तथा सुरक्षा में हस्तक्षेप करती है। इस तरह ये विश्व शान्ति तथा राष्ट्रो की स्वतन्त्रता पर अंकुश का साधन बन जाती है। परिणामस्वरूप गुटनिरपेक्षता का अर्थ है गठजोड़ विरोधी तथा शीत युद्ध विरोधी सिद्धान्त।
- भारतीय गुटनिरपेक्षता के निर्माता पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने एक बार कहा था, "गुटनिरपेक्षता का अर्थ है सैनिक गुटों से अपने आप को अलग रखने का किसी देश द्वारा प्रयत्न करना। इसका अर्थ है जहाँ तक हो सके तथ्यों को सैन्य दृष्टि से न देखना चाहेकभी-कभी ऐसा करना भी पड़ता है, परन्तु हमारा स्वतन्त्र दृष्टिकोण होना चाहिये तथा सारे देशों केसाथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध होने चाहिए।
- एम. एस राजन गुटनिरपेक्षता की परिभाषा देते हुए लिखते हैं विशेषतया तथा नकारात्मक रूप में गुटनिरपेक्षता का अर्थ है सैनिक या राजनीतिक गठबन्धों की अस्वीकृति सकारात्मक रूप से इसका अर्थ है अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर जेसे भीतथा जब भी यह सामने आए, प्रत्येक मामले के लाभों के अनुरूप ही तदर्थ निर्णय लेना।"

अन्त में हम कह सकते हैं कि विदेश नीति के एक मूलभूत सिद्धान्त के रूप में गुटनिरपेक्षता का अर्थ है शीत युद्ध का विरोध, सैन्य तथा राजनीतिक गठजोड़ और शक्ति गुटों से दूर रहना तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करने की नीति, अर्थात् राष्ट्रीय हित तथा विश्व-समस्याओं पर स्वतन्तापूर्वक निर्णय लेना। इसका अर्थ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में न तो पूर्ण अलगाववाद में है और न ही पूर्व प्रतिज्ञाओं पर आधारित लिप्तता है। यहएक सिद्धान्त है, जो अन्तर्राष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा को महत्व देता है तथा इसका समर्थन करता है और इसके लिए शीत युद्ध तथा सन्धियों में निर्लिप्तता की वकालत करता है।

गुटनिरपेक्ष विदेश नीति की विशेषताएं

गुटनिरपेक्षता अब पूर्णतया विकसित तथा विस्तृत अवधारणाबन चुकी है इसलिए इसकी सभी विशेषताओं को समाहित करने वाली कोई एक परिभाषा बनाना कठिन हो गया है। इसे समझने का ढंग इसकी विशेषताओं का विश्लेषण है।

1. **शीत युद्ध का विरोध-** गुटनिरपेक्षता का प्रादुर्भाव उस समय हुआ, जब अमरीका तथा (भू.पू.) सोवियत संघ के बीच युद्धकालीन सहयोग को शीत युद्ध के पक्ष में भुलाया जा चुका था। शीत युद्ध में प्रत्येक की यह कोशिश थी कि वह दूसरे को अलग कर देयुद्ध के बाद की शांति, एक तनावपूर्ण शांति थी तथा (भू. पू.) सोवियत संघ तथा अमरीका के बीच शीत युद्ध ने सारे विश्व को फिर से युद्ध के कगार पर खड़ा किया था। दोनों में से प्रत्येक ने दूसरे राज्यों विशेषतया नये बने भारत जैसे सम्प्रभु राष्ट्रों को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न किया। भारत जैसे कई और राज्य शीत युद्ध को अन्तर्राष्ट्रीय शांति के लिए पूर्णतया हानिकारक मानते थे तथा इसेकसाथ राष्ट्रों की शांति तथा सुरक्षा के लिए भी यह हानिकारक माना जाता था। इसलिए शीत युद्ध के विरोध को उन्होंने अपनी विदेश नीतियों के मूलभूत सिद्धान्त के रूप में अपनाया। गुटनिरपेक्षता ने शीत युद्ध का विरोध कियाइसने इसे असामान्य तथा भयानक नीति माना तथा इसके द्वारा पैदा किए गए गलत चलनों तथा तनावों से दूर रहने का प्रयत्न किया।
2. **सैन्य तथा राजनीतिक गठबन्धनों का विरोध-** नेहरू के शब्दों में, जब हम कहते हैं कि हमारी नीति गुटनिरपेक्षता की है, तो स्पष्ट रूप से हमारा अभिप्राय सैनिक गुट के साथ गुटनिरपेक्षता से होता है। तनावों को पैदा करते हैं का विरोध करती रही है। यह शीत युद्ध के उपकरण के रूप में NATO SEATO तथा वार्सा समझौते जैसी सुरक्षात्मक सन्धियों का विरोध करती है। ये सन्धियों दबाव का कारण बनती है तथा अपनी-अपनी सन्धियों के अन्तर्गत आने वाले सदस्यों पर प्रभुत्व जमाने तथा नियन्त्रण स्थापित कसे का साधन बनती है। गुटनिरपेक्षता ने इन सन्धियों को शीत युद्ध का संचालन करने शक्ति राजनीति तथा दूसरे राष्ट्रों पर नियन्त्रण जारी करने वाली एजेन्सियों माना और ये सन्धिया किसी राष्ट्र के स्वतन्त्र कार्य करने के अधिकार तथा उन्हें पूर्वाग्रहों तथा आत्मगत मूल्योंके अनुसार कार्य करने पर अंकुश लगाने वाली एजेन्सियां मानी गई। गुटनिरपेक्षता ने सभी प्रकार का राजनीतिक सुरक्षा सम्बन्धी समझौतों से दूर रहना माना क्योंकि ये गठबन्ध शीत युद्ध का कारण बनते थे। गुटनिरपेक्षता के अनुसार ये समझोते अथवा गठबन्धन विश्व शान्ति को सबसे बड़ा खतरा होते

हैं क्योंकि प्रत्येक ऐसी संधि की एक प्रति-संधि संगठित हो जाती है इसलिए इससे भय, शंका, घृणा तथा अविश्वास पैदा हो जाता है। परिणामस्वरूप शांति तथा सुरक्षा के नाम पर सम्भावित शांति की उल्लंघना के लिए पृष्ठभूमि तैयार हो जाती है। गुटनिरपेक्षता गठबनों को बुद्ध, साम्राज्यवाद तथा नव-उपनिवेशवाद का साधन मानती है तथा इसलिए इनका विरोध करती है।

3. **शक्ति राजनीति में निर्लिप्तता-** गुटनिरपेक्षता शक्ति राजनीति विरोधी अवधारणा है। यह संघर्ष को सबसे अधिक शक्तिशाली तत्व नहीं मानती। यह स्वीकार करती है कि प्रत्येक राष्ट्र को शक्तिशाली होने का अधिकार है परन्तु केवल अपने राष्ट्रीय हित की पूर्ति के लिए ही यह शक्ति की अवधारणा का स्थानीय, क्षेत्रीय, महाद्वीपीय तथा विश्वव्यापी प्रभुत्व की स्थापना के लिए संघर्ष का खण्डन करती है। यह शक्ति प्राप्त करने के लिए या स्तर निर्माण के लिए या दूसरों पर शासन करने के लिए शक्ति प्रयोग का खण्डन करती है। यह उस शक्ति संघर्ष का विरोध करती है जिसका उद्देश्य दूसरों पर अपनी इच्छाएं या उद्देश्य लादना होता है। यह शक्ति राजनीति को अन्तर्राष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा की उत्तधना की ओर एक कदम मानती है।
4. **शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व तथा अहस्तक्षेप-** शांतिपूर्ण सहअस्तित्व तथा अहस्तक्षेप पंचशील के दो मुख्य सिद्धान्त है। गुटनिरपेक्षता के भी यही सिद्धान्त है। गुटनिरपेक्षता की नीति यह विश्वास करती है कि शीत युद्ध तथा युद्ध की तैयारी द्वारा शान्ति कायम करने के प्रयत्न अनुचित तथा हानिकारक हैं तथा इन्हें शांतिपूर्ण सहअस्तित्व तथा अहस्तक्षेप के सिद्धान्त में बदल देना चाहिए। गुटनिरपेक्षता यह स्वीकार करती है कि अलग- अलग राजनीतिक व्यवस्थाओं वाले देश शांतिपूर्वक इकठे रह सकते हैं सहयोग कर सकते हैं तथा परस्पर लाभों के लिए विश्व शांति तथा समृद्धि के लिए कर सकते हैं। साम्यवादी और गैर साम्यवादी राष्ट्रों के बीच मित्रता पैदा करना तथा उसका विकास करना सम्भव है। इस प्रकार गुटनिरपेक्षता सभी के साथ बिना किसी भेदभाव के मित्रता तथा प्रयोग का सिद्धान्त है।
5. **स्वतन्त्र विदेश नीति का समर्थन-** गुटनिरपेक्षता में विदेश नीति के निर्माण तथा इसके लागू करने में स्वतन्त्रता को बनाए रखने का सिद्धान्त शामिल होता है। वास्तव में, गुटनिरपेक्षता का जन्म बड़ी सीमा तक नये राज्यों की महाशक्तियों तथा विकसित देशों के सम्भावित दबाव से अपनी विदेश नीतियों को स्वतन्त्र रखने की इच्छा के कारण हुआ। यह अनुभव किया गया कि किसी भी एक गुट के साथ गुटबन्दी कार्य की स्वतन्तता पर अंकुश लगा देता है। इससे गुट का अनुयायी बनना पड़ता है तथा निर्णय लेना भी पक्षपातपूर्ण होता है। इसके अतिरिक्त गुटबन्दी के कारण विदेश नीतियां राष्ट्रीयहितों पर तथा विश्व स्थिति पर उनके विचारों पर आधारित नहीं होती। इसके विपरीत गुटनिरपेक्षता स्वतस्ता तथा कार्य की स्वतन्त्रता का साधन हो सकती है। नेहरू के शब्दों में, अपने-आप में नीति केवल हमारे श्रेष्ठ निष्चयों के अनुसार कार्य करने की तथा हमारे जो मुख्य उद्देय तथा आदर्श है उन्हें आगे बढ़ाने की नीति हो सकती है। गुटनिरपेक्ष का अर्थ इसलिए स्वतन्त्र विदेश नीति है। नेहरू ने गुटनिरपेक्षता के इस पहलू को हमेशा महत्व दिया। भारत किसी भी देश या देशों के समूह पर आश्रित नहीं हो सकता। उसकी स्वतन्त्रता तथा विकास से एशिया में भारी अन्तर आएगा तथा इससे सारे विश्व को फर्क पड़ेगा। विदेशी सम्बन्धों में कार्य की स्वतन्त्रता को बनाए रखने का यह श्रेष्ठ साधन है। इसने गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों को अपनी भूमिका निभाने में राष्ट्रीय हितों के उद्देश्यों को प्राप्त करने में तथा उनके विश्व के बारे में स्वतन्त्र विचारों पर आधारित विदेश नीति निर्माण करने तथा लागू करने में सहायता दी है। कार्य करने की इस स्वतन्चता में गुटनिरपेक्ष राष्ट्र इस योग्य हो जाते है कि प्रत्येक मामले को उसके गुणों के आधार पर बिना पक्षपात के आंका जा सके। शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात् तथा सोवियत संघ एवं साम्यवादी गुट के विघटन के बाद गुटनिरपेक्ष राज्य अब इस नीति को स्वतन्त्र विदेश नीति के सिद्धान्त के रूप में एक उचित तथा आवश्यक नीति सिद्धान्त मानते हैं।
6. **अलगाववाद की नहीं, बल्कि क्रियाशीलता की नीति-** कभी-कभी गुटनिरपेक्षता की अलगाववाद समझ लिया जाना या फिर इसे क्रियाशीलता की नीति घोषित कर दिया जाता है। गुटनिरपेक्षता अलगाववाद अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों से दूर रहने की नीति का खंडन करती है। यह अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में पूर्णता भाग लेने के अधिकार तथा उत्तरदायित्व को स्वीकार करती है। यह मात्र असहाय दर्शक तथा तमाशबीन बने रहने की नीति का खंडन करती है। इसका अर्थ विश्व राजनीतिक में पूर्णतया बहादुरी से भाग लेना तथा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों व समस्याओं पर स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विचार प्रकट करना एवं अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सुरक्षा तथा विकास के लिए पूर्ण सहयोग देना है। गुटनिरपेक्ष राज्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की प्रक्रिया में पूर्णतया तथा सक्रियता से जुटे हुए है। वे हमेशा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों तथा समस्याओं पर अपने विचार प्रकट करते हैं तथा निर्णय लेते रहते हैं वे अपने अन्तर्राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों को निभाने में कभी पीछे नहीं रहे।
7. **गुटनिरपेक्षता न तो कूटनीतिक साधन है न ही वैधानिक स्तर-** गुटनिरपेक्षता उस कूटनीतिक तटस्थता से बहुत भिन्न है जो कि कोई भी राष्ट्र संकट के समय प्रयुक्त कर सकता है। कूटनीतिक तटस्थता का अर्थ संकट की वास्तविकताओं का पता होने के बावजूद

अक्रियाशीलता की नीति अर्थात् यह पता होता है कि क्या ठीक है तथा क्या गलत फिर भी कोई निर्णय या कार्यवाही नहींकी जाती। इसके विपरीत, जैसे जार्ज तिस्का (George Liska) कहते हैं, गुटनिरपेक्षता का अर्थ है उचित तथा अनुचित में भेद करना तथा उचित का समर्थन करना। यह युद्धकालीन तटस्थता भी नहीं है। जिसमें एक राष्ट्र तटस्थता का स्तर अपना लेता है। तथा युद्ध में दूर रहता है। गुटनिरपेक्षता का सिद्धान्त शीतयुद्ध तथा सैनिक गठबन्धनों से दूर रहना है। इसका अर्थ है आत्म निर्णय तथा राष्ट्रीय हितों पर आधारित स्वतन्त्रतापूर्वक कार्यवाही। इसका अर्थ यह नहीं कि दूर खड़े रहो या जानने से इन्कार करो इसका अर्थ अनिर्णय या निर्जीवता का स्वागत भी नहीं। यह शीतयुद्ध से लाभ उठाने वाली नकारात्मक और अवसरवादी नीति नहीं है। यह कार्य करने की सकारात्मक तथागतिशील नीति है। यह स्विटजरलेण्ड की तरह स्थायी तटस्थता वाला वेध स्तर भी नहीं है। यह वह सिद्धान्त या वह नीति है, जो एक सरकार अपनाती है। तथा जो उसके विदेशों के साथ सम्बन्धों का नियमन करती है। इसलिये सरकार में हुये प्रत्येक परिवर्तन केबाद गुटनिरपेक्षता में विश्वास को पुनः स्पष्ट करना पड़ता है।

8. **गुटनिरपेक्षता, गुटनिरपेक्ष देशों की गुटबन्दी नहीं है-** गुटनिरपेक्षता का एक अन्य महत्त्वपूर्ण लक्षण यह है कि यह न केवल दोनों शक्ति गुटों के विरुद्ध है बल्कि तीसरे गुट अर्थात् गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के गुट के निर्माण के भीविरुद्ध है। यह नीति एक तीसरी शक्ति या 'तीसरा गुट बनाने की नीति नहीं है। भारत की गुटनिरपेक्षता के पीछे'मुनरो सिद्धान्त' जैसा या नेहरू सिद्धान्त जैसा कुछ भी नहीं है। गुटनिरपेक्षता का उद्देश्य शांति का एक क्षेत्र बनाना है एक ऐसा क्षेत्र जिसमें युद्ध, शीत-युद्ध तथा गठबन्धनों का खण्डन किया जाता है, शान्ति का समर्थन सकारात्मक ढंग से किया जाता है तथा सहयोग में विश्वास किया जाता है। गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों ने हमेशा सफलतापूर्वक, गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के समूह को एक गुट में बदलने का विरोध किया है। गुटनिरपेक्ष एक आन्दोलन है तथा इसके पीछे कोई औपचारिक संस्था का संगठनीय ढांचा या संविधान नहीं है।
9. **गुटनिरपेक्षता, शान्तिपूर्ण, सह-अस्तित्व तथा आपसी विकास के लिये सहयोग की नीति है-** गुटनिरपेक्षता का अर्थ है शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व द्वारा राष्ट्रों में शांति तथा सहयोग लाना। यह शीत युद्ध तथा गठबन्धनों का इसलिए खंडन करती है क्योंकि ये शांति के नहीं, युद्ध के साधन है। इसका अर्थ है शांति की नीति(Policy of Peace) यह ठहरी हुई धीमी आवाज में बात करने की, न कि चिल्लाने की नीति है। यह अपनी शक्तिशाली भावनाओं को शक्ति में न कि गुस्से में बदलनेकी नीति है। यह इस आधार वाक्य पर आधारित है कि युद्ध अनिवार्य नहीं है, इसे टाला जा सकता है। शीत युद्ध सेनिक संधियां तथा शक्ति आधारित राजनीति विशेषतया दोनों विरोधी गुटों के बीच युद्ध की अनिवार्यता पर आधारित हैं। गुटनिरपेक्षता युद्ध का तथा इसलिए सैनिक संधियों तथा शक्ति आधारित राजनीति का खंडन करती है। यह शान्तिपूर्ण साधनों से शान्ति का समर्थन करती है। यह सभी झगड़ों के शांतिपूर्ण निपटारे में विश्वास करती है तथा राष्ट्रों के बीच विरोधों को समाप्त करने के लिए शान्तिपूर्ण तालमेल को श्रेष्ठ साधन मानती है। एकअन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में गुटनिरपेक्षता के विकास का आधार ऐसा ही तर्क है।

इस प्रकार उक्त सभी तत्व गुटनिरपेक्षता के मूलभूत तत्व है। विदेश नीति के एक सिद्धान्त के रूप में इसका अर्थ है, किसी भी शक्ति गुट के साथ वचनबद्धता से स्वतन्त्रता तथा बाहरी मामलों में कार्यवाही करने की स्वतन्त्रता यह निष्क्रियता का नकारात्मक सिद्धान्त या तटस्थता या अलगाववाद नहीं है। इसके विपरीत यह क्रियाशीलता का सिद्धान्त है। यह एक गतिशील अवधारणा है तथा विदेशनीति की स्वतन्त्रता का मूलभूत तथा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।1961 में नेहरू, नासिर तथा टीटो ने मुरनिरपेक्षता की पांच अनिवार्य विशेषताएं या परीक्षण बनाए थे, ये हैं

I. गुटनिरपेक्षता तथा शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व पर आधारित स्वत विदेश नीति
II. नव-उपनिवेशवाद का विरोध तथा उदारवादी आन्दोलन का समर्थना
III. किसी भी सैनिक संधि/गुट का सदस्य न होना।
IV. किसी भी बड़ी शक्ति के साथ द्विपक्षीय सैनिक संधि की अनुपस्थिति।
V. राज्य की भूमि पर किसी भी विदेशी सैनिक अड्डे/ अड्डों की अनुपस्थिति।

प्रत्येक राष्ट्र जो गुटनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में स्वीकृत होना चाहता है, उसे इन पाँचों शर्तों को पूरा करना होता है।

रूस-यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में भारत कीभूमिका

अक्सर यह सवाल उठता है कि क्या गुट निरपेक्ष देशों का समूह अंतरराष्ट्रीय राजनीति में बड़ी तेज़ी से अपनी अहमियत खोता जा रहा है। यह सवाल इसलिए भी मौजूद है क्योंकि जब गुट निरपेक्ष आंदोलन की पहली बार परिकल्पना की गई थी, तब से लेकर अब तक

दुनिया बहुत बदल गई है। हालांकि अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं आमतौर पर ऐसे अचानक खत्म नहीं होतीं केवल आंख बंद करके विश्व घटनाक्रम को देखते रहना गुटनिरपेक्षता नहीं है। यह सही को सही और गलत को गलत कहने और इसमें अन्तर करते हुए सही का पक्ष लेने की नीति भी है। गुटनिरपेक्षता का अर्थ अपने आपको सैनिक गुटों से दूर रखना तथा जहां तक सम्भव हो तथ्यों को सैनिक दृष्टि से देखना है। यदि ऐसी आवश्यकता पड़े तो स्वतंत्र दृष्टिकोण रखना तथा दूसरों देशों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखना गुटनिरपेक्षता के लिए आवश्यक है।

आज जब रूस ने यूक्रेन पर हमला किया है और दुनिया दो धड़ों में बंट गई है तो जवाहर लाल नेहरू के शब्द काफी अहम हो जाते हैं। ऐसे में अब सवाल यह है कि मौजूदा स्थिति में भारत के सामने क्या विकल्प है? संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में रूस के खिलाफ आए प्रस्ताव में भारत ने तटस्थ रहने का रास्ता चुना है। पंडित नेहरू गुटनिरपेक्षता को नीति को व्यापक संदर्भ में शांति की नीति मानते थे। यह न केवल भारत बल्कि एशिया और अंततः विश्व शांति के लिए सहायक है। युद्धरोकने में संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे वैश्विक संगठनों की असफलता से मोहभंग हुए राष्ट्रों को तमाम वैश्विक मुद्दों पर एक साथ लाने के संदर्भ में नेहरू कर्नल नासिर और मार्शल टीटो का दिखाया गुटनिरपेक्ष आंदोलन के रास्ते का महत्व काफी बढ़ जाता है। इसकी वजह है कि 120 सदस्य देशों के साथ इस संगठन का आधार बहुत ही व्यापक है। वैश्विक स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) के बाद 'गुटनिरपेक्ष आंदोलन' सबसे बड़ा राजनीतिक समन्वय और परामर्श का मंच है। गुटनिरपेक्षता की नीति में समय के अनुरूप ढलने की क्षमता है। यह निर्भीकता तथा साहस की नीति है जो न्याय की रक्षा के लिए आवश्यक हुआ तो युद्ध का सहारा भी ले सकती है।

भारत क्या गुटनिरपेक्षता से आगे निकल चुका है?

भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अपने बयान में कहा था कि भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्ष आंदोलन का तत्त्व एक विशेष काल एवं संदर्भ में ही प्रासंगिक था। भारत अब गुटनिरपेक्षता से आगे निकल गया है, ये आंदोलन एक खास दौर के लिए था, अब भारत एक अलग दौर में है। एस-जयशंकर ने कहा कि हमारी विदेश नीति में 'एडवांसिंग प्रोस्पेरिटी एण्ड इन्फ्लुएंस के तत्त्व को प्रमुखता से अपनाया जायेगा। हालाँकि विदेश मंत्री ने अपने बयान में यह भी स्पष्ट किया कि भारतीय विदेश नीति में नैम (NAM) के तत्व पर कम बल देने का यह तात्पर्य नहीं है कि भारत किसी गठबंधन का हिस्सा होने जा रहा है। फिलहाल भारत किसी भी गठबंधन का हिस्सा नहीं बनेगा।

निष्कर्ष

यूरोप के नजरिए से भारत सिर्फ अपने हित में खड़ा हो रहा है. उनका तर्क यह है कि यूरोप और अमेरिकी पक्ष वास्तविक नियंत्रण रेखा पर भारत के पीछे खड़े नहीं हुए थे, इसलिए नई दिल्ली ने भी यूक्रेन मुद्दे पर पश्चिम का पक्ष नहीं लिया है। लेकिन इस बात में भी कोई शक़ नहीं है कि रूसी हमले के ख़िलाफ़ प्रतिक्रिया देने के लिए भारत पर दबाव पड़ रहा है। पहले के मुकाबले, अब तमाशबीन बने रहना एक बड़ा कूटनीतिक जोख़िम है। इसके साथ ही ख़बरें आ रही हैं कि युद्ध की वजह से ऊर्जा कीमतों में उछाल आने के बाद रूस से कम दाम पर भारत के तेल के आयात में बढ़ोतरी हुई है. यही नहीं, भारत ने अब तक बेहद सावधानी बरतते हुए रूस की निंदा करने से खुद को रोका हुआ है. भारत इससे पहले रूस को 'दीर्घकालिक' और 'समय के साथ परखे हुए मित्र' की संज्ञा दे चुका है। अमेरिका अब भारत को ये समझाने की कोशिश कर रहा है कि वक्त के साथ स्थितियां बदल चुकी हैं क्योंकि अमेरिका और भारत के बीच रिश्तों में गहराई आई है और दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 150 अरब डॉलर का है जबकि रूस और भारत के बीच द्विपक्षीय व्यापार मात्र आठ अरब डॉलर का है। इसके साथ ही विशेषज्ञ कहते हैं कि रूस के साथ भारत के क़रीबी रिश्तों का मतलब ये नहीं है कि वह यूक्रेन संकट को लेकर संवेदनशील नहीं है। भारत ने सभी मंचों पर यूक्रेन में जारी संघर्ष और मानवीय संकट के प्रति गंभीर चिंता जताई है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति पुतिन और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की से भी हिंसा ख़त्म करने का आग्रह किया है। भारत का रुख संतुलित और सिद्धांतों के आधार पर रहा है भारत लोकतंत्र, संवाद, क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान और यूक्रेन की संप्रभुता के लिए खड़ा हुआ है, हमें रणनीतिक रूप से तटस्थ रहना है।

संदर्भ सूची

- फड़िया और फड़िया, (2022), अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स (आगरा)।
- Adhikari, S. (2004). Modern Strategic Thought. India: Kilaso Books.
- Rauch, C. (2008). Non-alignment. In *Farewell Non-Alignment? Constancy and change of foreign policy in post-colonial India* (pp. 2–5). Peace Research Institute Frankfurt. http://www.jstor.org/stable/resrep14485.4

- https://www.indiaolddays.com/gut-nirapekshata-kee-neeti/
- Harshe, R. (1990). India's Non-Alignment: An Attempt at Conceptual Reconstruction. *Economic and Political Weekly*, *25*(7/8), 399–405. http://www.jstor.org/stable/4395968